# डॉ रामविलास शर्मा

- डॉ. रामविलास शर्मा हिंदी के प्रख्यात मार्क्सवादी समीक्षक, विचारक, भाषाविद् एवं कवि हैं |
- डॉ. रामविलास शर्मा की प्रथम समीक्षा कृति 'प्रेमचंद'( 1941 ई. ) है | इसमें उन्होंने प्रेमचंद का मार्क्सवादी ढंग से विश्लेषण करने का प्रयास किया है |
- मुंशी प्रेमचंद पर रामविलास जी की दूसरी पुस्तक 'प्रेमचंद और उनका युग' ( 1952 ई. ) पहली पुस्तक की अपेक्षा प्रगतिशील साहित्यिक आंदोलन के भीतर चल रहे तत्कालीन विवादों से बहुत सीधे रूप में संबद्ध है |
- समीक्षकों ने डॉ.रामविलास शर्मा के सैद्धांतिक चिंतन को देखते हुए उन्हें 'वस्तुवादी' घोषित किया है, परंतु उनकी कला-संबंधी स्थापनाओं का गहनता से अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि उन्होंने कलात्मकता के महत्व का निषेध नहीं किया है |
- डॉ. रामविलास शर्मा ने ककाव्सर्जना में ' रूप', 'भावना' और 'विचार'- इन तीनों के सम्यक योग पर बल दिया है |
- डॉ. रामविलास शर्मा ने काव्य प्रयोजन 'स्वान्त:सुखाय' या 'आत्मपरितोष' में विश्वास नहीं किया है, उनकी स्पष्ट धारणा है- “कवि और कलाकार का कर्तव्य होता है कि वह उत्पादन संबंधों व उत्पादन शक्तियों के संघर्ष को समझे और अपनी कला द्वारा विकासमान शक्तियों को सहारा देकर उनसे प्रेरणा प्राप्त करके मनुष्य और समाज की मुक्ति की ओर अग्रसर हो |
- डॉ.रामविलास शर्मा ने 'श्रृंगार' के महत्व को स्वीकार करते हुए 'करुणा' को काव्य का सर्वोपरि गुण माना है |
- डॉ. रामविलास शर्मा की दृष्टि में दर्शन और विज्ञान की अपेक्षा ‘कविता' का प्रभाव अधिक व्यापक है |
- डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, काव्य में सूक्तियां ही अपेक्षित नहीं है, उसमें मानव जीवन का सजीव चित्रण भी होना चाहिए |
- डॉ. रामविलास शर्मा की मान्यता है कि हम टिकाऊ और प्रभावशाली साहित्य की रचना तभी कर सकेंगे जब समाज की गतिविधियों को पहचानेंगे, समाज के प्रगतिशील वर्ग से नाता जोड़ेंगे, प्रतिक्रियावादी शक्तियों का विरोध करेंगे और अपनी रचना द्वारा समाज की प्रगति में सहायक होंगे |
- डॉ. रामविलास शर्मा ने भारतेंदु युग के साहित्यकारों में 'भारतेंदु' की प्रशंसा विशेष रूप से की है | उनके अनुसार, भारतेंदु ने हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय और जनवादी तत्वों को प्रतिष्ठित किया है |
- डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार- साहित्य में जो रीति-विरोधी क्रांति शुरू हुई उसका पहला चरण है 'द्विवेदी युग' और उसी का विकास ‘छायावाद' और 'प्रगतिवाद’ में होता है |
- डॉ. रामविलास शर्मा के आदर्श समीक्षक आचार्य रामचंद्र शुक्ल है, क्योंकि उन्होंने हिंदी की सैद्धांतिक आलोचना को एक ठोस दार्शनिक आधार दिया, रस की अलौकिकता का निषेध और रीति-ग्रंथों की सीमा में बंधे समीक्षकों का विरोध किया है |
- मुंशी प्रेमचंद जी डॉ.रामविलास शर्मा के प्रिय लेखक है, क्योंकि उन्होंने जनता को अपनी कला का शक्ति स्रोत माना, वे इस बात के प्रमाण हैं कि जनता से अलग रहकर महान साहित्य की रचना नहीं की जा सकती |

- डॉ. रामविलास शर्मा की 'निराला' संबंधी समीक्षा उनके समीक्षक व्यक्तित्व के चरम उत्कर्ष की साक्षी है |
- डॉ. रामविलास शर्मा के मतानुसार, मुक्तिबोध का काव्य की आत्मासंघर्ष की गाथा है | उनकी आत्मसंघर्ष के अनेक स्तर हैं | एक स्तर है - निम्न वर्ग की भूमि को छोड़कर सर्वहारा वर्ग से तादात्म्य स्थापित करने का | दूसरा स्तर है- मन के दु:स्वपनों, पाप-बोध, मृत्यु- चिंतन, असामान्य मानसिक स्थिति से निकलकर स्वयं को और संसार को वस्तुगत रूप से देखने का | तीसरा स्तर है- अपनी काव्यकला को निरंतर विकसित करने का |
- डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, मुक्तिबोध के काव्य में 'अस्तित्ववाद' का 'लघुमानव' भी है और 'रहस्यवाद' का विराट पुरुष भी |
- डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, शमशेर बहादुर सिंह का काव्य रीतिवादी रोमानी, सौंदर्यबोध और मार्क्सवादी विवेक के द्वंद का काव्य है |
- डॉ.रामविलास शर्मा की दृष्टि में नागार्जुन का काव्य दृढ, क्रांति भावना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है |